एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# बुन्देलखण्ड में जैविक खेती का महत्व एवं रणनितियाँ

(*राहुल कुमार रॉय[1] एवं हिमांशु पाण्डेय[2])
[1]बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश
[2]भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rahulncap@gmail.com

प्राचीन काल से मानव स्वास्थ एवं वातावरण के अनूरुप खेती की जाती थी जिसके प्रमाण हमारे ग्रंथो एवं वेदों में भी मिलते है, अर्थात कृषि व पशुपालन संयुक्त रुप से मिलकर करने की परम्परा रही है, जो अत्यधिक लाभदायी तथा वातावरण एवं प्राणी के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में पशुपालन धीरे–धीरे कम होता गया और कृषि में रासायनिक खादों जहरीले कीटनाशकों का उपयोग बढ़ता गया जिसके परिणामस्वरुप प्रकृति में जैविक एवं अजैविक चक्र प्रभावित होने के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति खराब होने लगी और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है, रासायनो के प्रयोग से मानव स्वास्थ्य में भी गिरावट आ रही है। देश में कुल 67 प्रतिशत जनसंख्या और 55 प्रतिशत श्रमिक कृषि एवं इससे संबद्ध व्यवसाय से जुड़े है, बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण पोषण हेतु हरित क्रान्ति का आगाज हुआ और पिछले चार दशकों से रासायनिक आदानों के अपरिमेय उपयोग को नियोजित करने वाली आधुनिक खेती के परिणामस्वरुप उत्पादन में उतरोत्तर वृद्धि हुई जो नीचे तालिका में दी गयी है।

**वर्ष 1950–51 से 2018–19 भारत में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र में उत्पादन की गतिशीलता**

| विवरण | 1950–51 उत्पादन (मिलियन टन) | 2018–19 उत्पादन (मिलियन टन) | टाइम बढ़ोत्तरी |
|---|---|---|---|
| खाद्यान्न | 50.83 | 284.95 | 5.61 |
| दलहन | 8.41 | 23.4 | 2.78 |
| तिलहन | 5.16 | 32.26 | 6.25 |
| कपास | 0.52 | 4.88 | 9.38 |
| गन्ना | 57.05 | 400.15 | 7.01 |
| औद्यानिकी | 96.56 (1991–92स्तर) रु | 314.67 | 3.26 |
| दूध | 17.00 रु | 187.7 | 9.73 |
| मछली रु | 0.75 रु | 11.41 | 15.21 |
| अण्डा रु | 1830 रु | 87050 | 47.57 |
| मीट रु | 1.9 (1998–99 स्तर) रु | 7.37 | 3.88 |

*स्रोत डारेक्टरेट ऑफ एकोनामिक्स एण्ड स्टैटिस्टिक्स गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया*

आधुनिक खेती में रसायनों के प्रयोग के कारण प्राकृतिक असंतुलन, और मृदा स्वास्थ्य में भारी नुकसान देखने को मिलता है, इसके अलावा मृदा अपरदन भूजल स्तर में कमी, मृदा लवणीकरण, उर्वरको एवं कीटनाशकों के करण प्रदूषण, आनुवांशिक क्षरण, पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, भोजन की गुणवत्ता में कमी और खेती की लागत में वृद्धि जैसे कारण खेती एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। इस गम्भीर समस्या से निजात पाने के लिए वर्तमान सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं एवं परियोजनाओं के माध्यम से जैविक खेती, परम्परागत कृषि प्रकृतिक खेती एवं प्रचीन कृषि को बढ़ावा दिया जा रहा है

तथा वर्तमान में जैविक खेती से उत्पादित जैविक उत्पाद की मांग दुनिया भर में बढी जिसकी आपूर्ति के लिए बहुत से सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थनों द्वारा उत्पादन किया जा रहा है और जैविक उत्पाद का बाजार में विक्रय कर अत्यधिक लाभ मिल रहा है और आकर्षण का केन्द्र भी बना है।

सिक्किम भारत का एक ऐसा राज्य है जो 100 प्रतिशत जैविक खेती के लिए विश्व में किर्तिमान स्थाापित किया है, खेती में बढ़ते रसायनों के प्रयोग को कम करने तथा जैविक खेती की तरफ किसानों में जागरुकता फैलाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं चालाई जा रही है, जिससे किसानों में जैविक खेती की तरफ रुझान भी बढ़ाना है। जैविक खेती से जहॉ उत्पादन लागत में कमी आती है वही पर रसायन मुक्त भोजन मानव स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद के साथ–साथ जैविक उत्पाद की उत्पादन लागत भी कम होती है। इसके महत्व को देखते हुये मध्य प्रदेश सरकार ने सर्वप्रथम वर्ष 2001–02 में जैविक खेती को अन्दोलन के रूप में चलाकर प्रदेश के प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड के एक गांव में जैविक खेती प्रारम्भ की और इन गावों को जैविक गांव का नाम दिया गया और धीरे–धीरे जैविक खेती को बढ़ाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र प्रदेश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अत्यन्त पिछड़ा होने के कारण आज भी यहा के किसानों द्वारा कृषि में रासायनिक खादों एवं जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत कम करते है। इस प्रकार इस क्षेत्र के किसान जैविक खेती अथवा परम्परागत खेती ही करते है और जैविक खाद के प्रयोग द्वारा उत्पादन किया जा रहा है। हमीरपुर को सरकार द्वारा जैविक जिला घोषित कर दिया गया है। इसी प्रकार महोबा जिले में भी जैविक खेती किसानो द्वारा की जा रही है और जैविक खेती हेतु किसानों को जागरुक करने के साथ–साथ सरकारी योजानओं के द्वारा किसानों को जैविक खेती हेतु प्रोत्साहित करने की नितान्त आवश्यकता है। हमीरपुर जनपद में जैविक दलहनी/तिलहनी फसलों के उत्पादन का वर्षवार 2017–18 एवं 2018–19 के आंकड़े नीचे तालिका में दिये गये है ।

**जनपद हमीरपुर में जैविक दलहनी/तिलहनी फसलों का वर्षवार उत्पादन एवं प्रदेश के बाहर विपणन से लाभ**

| फसल का नाम | उत्पादन (मिट्रिक टन) | | विपणन हेतु अवशेष मात्रा 2018–19 (अनुमानित) | हमीरपुर में औसत बाजार मूल्य (रु0 प्रति कु0 में) | विपणन हेतु अवशेष मात्रा के विक्रय से प्राप्त धनराशि (लाख में) | दिल्ली में औसत बाजार मूल्य (रु0 प्रति कु0 में) | हमीरपुर और दिल्ली बाजार में अन्तर (रु0 प्रति कु0 में) | प्रदेश के बाहर विपणन से लाभ (लाख में) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 2017–18 | 2018–19 (अनुमानित) | | | | | | |
| उर्द | 63.40 | 55.60 | 22.24 | 4500 | 10.01 | 5000 | 500 | 1.11 |
| मूंग | 57.50 | 67.30 | 26.92 | 4500 | 12.38 | 6500 | 1900 | 5.11 |
| अरहर | 9.95 | 23.80 | 9.52 | 5200 | 4.95 | 5800 | 600 | 0.57 |
| चना | 82.60 | 89.80 | 35.92 | 4100 | 14.73 | 4800 | 700 | 2.51 |
| मटर | 75.80 | 78.60 | 31.44 | 4300 | 13.52 | 4800 | 500 | 1.57 |
| मसूर | 78.40 | 65.80 | 26.32 | 3800 | 10.00 | 5000 | 1200 | 3.16 |
| अलसी | 29.10 | 35.80 | 14.32 | 3600 | 5.16 | 4200 | 600 | 0.86 |

*स्रोत जिला कृषि सांख्यिकी पत्रिका हमीरपुर*

उपर्युक्त आंकड़ो से स्पष्ट है कि जनपद हमीरपुर में जैविक दलहनी/तिलहनी फसलों की उत्पादन एवं विपणन के द्वारा किसानों की आय दुगुनी करने और अत्मनिर्भर भारत बनाने का सपना निश्चित रूप से साकार होगा।

**जैविक खेती का महत्व**

1. मृदा उर्वरता में वृद्धि।
2. रासायनिक खादों पर निर्भरता कम होने के कारण उत्पादन लागत में कमी।
3. फसलों की उत्पादकता में वद्धि।
4. जैविक खाद के प्रयोग से मृदा की गुणवत्ता में वृद्धि।
5. मृदा में जलधारण क्षमता एवं जल स्तर में वृद्धि।
6. पर्यावरण/वातावरण की सुरक्षा।
7. फसल उत्पादन में वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में कमी होती है।

8. जैविक उत्पाद की अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय अधिक मांग होने के कारण लाभकारी मूल्य प्राप्त होता है
9. पशुधन एवं पशुपालन को बढ़ावा देना ।

**जैविक खेती हेतु रणनितियॉ**

1. जैविक खेती के लिए मानक के आधर पर क्षेत्र का चुनाव करना महत्वपूर्ण है।
2. जैविक खेती के लिए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के अधार पर फसल का चुनाव।
3. जैविक खेती के प्रोत्साहन हेतु सरकारी योजनाओं को लागू किया जाना चाहिए।
4. जैविक खेती खेती हेतु ग्रुप को चिन्हित एवं जागरुक करना ।
5. चरणबद्ध तरीके से जैविक खेती को बढ़ाया जाना चाहिए।
6. जैविक खेती हेतु किसानों को प्रोत्साहित करना।
7. जैविक उत्पाद हेतु मानक का निर्धारण होना चाहिए।
8. जैविक उत्पाद कि बिक्री हेतु प्रमाणीकरण संस्था की स्थापना ।
9. जैविक उत्पाद की विक्री हेतु उतकृष्ट बाजार की स्थपना।
10. जैविक खेती हेतु उद्यमिता का विकास होना चाहिए।